B.A. Part-I. हिन्दी रचना (अनिवार्य)

अज्ञेय की कविता साँप –

साँप
तुम सभ्य तो हुए नहीं
नगर में बसना
भी तुम्हें नहीं आया
एक बात पूछूँ – (उत्तर दोगे?)
तब कैसे सीखा डसना –
विष कहाँ पाया?
– अज्ञेय

प्रस्तुत कविता 'प्रयोगवाद' के जनक सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित है। इसके माध्यम से कवि ने शहर (नगर) की संवेदनशून्यता पर करारा व्यंग्य किया है।

कवि का कथन है कि साँप एक ऐसा जानवर है जिसे मानवीय व्यवस्था के द्वारा सभ्य नहीं कहा जा सकता और न ही वह नगरी व्यवस्था के अनुसार रह सकता है। इसलिए कवि को आश्चर्य होता है कि न तो वह सभ्य है, और न तो उसे शहर में रहना ही आता है किन्तु उसका यह गुण है कि वह डसता है जबकि यह काम तो नगरवासियों का है। वह ठीक उसी प्रकार डसता है जैसे नगरों में शब्द जाल फैलाने वाले कृतघ्न लोग एक दूसरे को डसने का काम करते

हैं, एक दूसरे पर जहर उगलते रहते हैं। कवि साँप को संबोधित करते हुए कहता है कि यह बताओ कि उसने डसने की कला कहाँ से सीखी है जबकि वह वास्तव में नगर का निवासी नहीं है। सभ्य समाज में अनेक लोग हैं जो सर्प से भी अधिक विषधारी हैं। लोग एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए घिनौनी से घिनौनी हरकत करते हैं। एक दूसरे के लिए जहर उगलते रहते हैं।

विशेष :-

(1) नगरों में रहनेवाले सभ्य समाज पर तीखा व्यंग्य किया गया है
(2) सभ्य समाज में अनेक लोग हैं जो सर्प से भी अधिक विषकारी हैं।
(3) एक प्रसिद्ध कहावत यहाँ पर सार्थक होती है कि आदमी आदमी को डँसु रहा पा बगल में बैठा साँप देखकर हँस रहा पा।
(4) प्रस्तुत कविता की शैली प्रभावशाली एवं हृदयस्पर्शी है
(5) इसमें उपमा और उत्प्रेक्षा की छटा दर्शनीय है
(6) भाषा - शुद्ध खड़ी बोली का प्रयोग।
(7) मुक्तक छंद की रचना है।